UGC Serial No.: 40965 Impact Factor 2.131 ISSN : 2249-6742

Shodh Pravah

An Multidisciplinary Quarterly Referred International Research Journal

Vol. VIII No. 1 (March-August 2018)

Chief-Editor
Dr. Shivdeepak Sharma

Sub-Editor
Dr. Keshav Kishor Kashyap

Published by
Deptt. of Sanskrit, L.S. College,
B.R.A. Bihar University, Muzzafarpur (Bihar), INDIA

CONTENT

55. धरती के कवि त्रिलोचन मण्डलोई की रचनाधर्मिता
डॉ0 नन्दकिशोर चौधरी 289-292

56. लोक सभा क्षेत्र गाजीपुर में मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन (लोक सभा निर्वाचन 2009 के विशेष सन्दर्भ में)
डॉ0 श्री प्रकाश सिंह 293-295

57. माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके सृजनात्मक चिन्तन पर प्रभाव का अध्ययन
डॉ. ऋषिकेश मिश्रा
प्रीति कछावा 296-302

58. RFID Technology (Radio Frequency Identification)
Babli 303-307

59. स्त्रियों की सामाजिक–आर्थिक निर्भरता का प्रश्न एवं परिवारिक सम्बन्धों की समझ : एक दृष्टि (स्त्री दर्पण पत्रिका के विशेष संदर्भ में)
रघुनन्दन सिंह 308-312

60. गोदान के वातायन से किसान जीवन की त्रासदी का अंकन
सूर्य प्रकाश 313-316

61. Feminization of Poverty in India
Dr. Poonam Verma 317-329

62. 17 वीं सदी में मुसलमानों का सामाजिक जीवन
डॉ0 प्रियंका तिवारी 320-331

63. भारतेन्दु के नाटकों में रंगशिल्प विधान
सुवर्णा पाण्डेय 332-335

64. Amalgamation and merger of banks in india
Dr. Brijesh Kumar 336-339

65 **भारत में नक्सलवाद का विकास**
Awadhesh Narain Rai 340-344

66 **Indo-Pak Relations : Nuclear Dimension**
Dr. Pankaj Kumar Singh, ... 345-347

67 King Lear-Shakespeare's Concept Of Petriarchal Contract And Dowry
Dr. (Mrs) Satyamvada Singh 348-351

68 Teacher Education In The Present Era
Dr. Samar Bahadur Singh 352-354

69 **भारतीय संगीत की कर्मठ योगी : आचार्य बृहस्पति**
डॉ0 दीप्ति सिंह 355-357

70 **बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं में ऋणों की** वसूली–समस्यायें **एवं समाधान**
डॉ0 शैलेन्द्र कुमार उपाध्याय 358-361

UGC Serial No

भुगत

अन्त
के निवासियों
प्रस्तुत करता
विदेशी देश के

निवा
जिनका आर्थि
जो साधारणत
है। एक देश
उस देश में
भारतीय एक
केन्द्र भी वही
नागरिक बना

दूसरे
तिमाही के भी
आँकडों के रु

जब
पड़ते है। नब्बे
संकट से उबर

भुगतान शेष

1. **दृश्य**
की
है।

2. **अदृश**
कहा
बनी

3. **पूँजी**
परिस

व्यापार शेष त

व्याप
जाता हैं। यह

* मुखराय किर

Shodh Pravah (March-August, 2018)

भारतीय संगीत की कर्मठ योगी : आचार्य बृहस्पति

डॉ0 दीप्ति सिंह*

रामपुर दरबार ने अनेक महान कलाकारों, संगीतज्ञों और संगीत जन्म दिया है। इस दरबार से संबंध रखने वाले विद्वानों की श्रृंखलाओं में आचार्य बृहस्पति अंतिम संगीत शास्त्री और वाग्गेयकार थे। वर्तमान युग के किसी भी संगीत प्रेमी के लिये आचार्य बृहस्पति का नाम अज्ञात नहीं है। इस महान व्यक्ति ने अपना संपूर्ण जीवन भारतीय संगीत को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिये उत्सर्ग कर दिया।

आचार्य कैलाश चन्द्रदेव बृहस्पति का जन्म रामपुर में 20 जनवरी, 1918 में हुआ। इनकी चार पीढ़ियां रामपुर में ही रह चुकी हैं। इनके परदादा पं0 दत्तराम जी रामपुर रियासत के राजपंडित थे। दो प्रकाण्ड विद्वान, ज्योतिषशास्त्र व गणित के ज्ञाता, सिद्ध तांत्रिक, कवि और संगीतज्ञ भी थे । इनके पिता पं0 गोविन्दराम जी भी संस्कृत के विद्वान पंडित तथा कुशाल शिक्षक थे, जिनके संरक्षण में बालक कैलाशचन्द्र ने संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की।

पुरातन और आधुनिक प्रशिक्षण पद्धति के समन्वित रूप ने आचार्य जी के बहुमुखी व्यक्तित्व का निमाण किया है। इन्होंने बाल्यकाल से ही सद्गुरूओं के चरणों में बैठकर विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन किया तथा काव्य–कला एवं संगीत कला की साधना की। जीवन बचपन से ही संघर्षमय रहा। दस वर्ष की आयु में पिता की मृत्यु हो गई किंतु माता ने, जो स्वयं विदुषी, दृढ़ व स्वाभिमानी थी, साहस व धैर्य से पुत्र का लालन पालन किया और ऐसे संस्कार डाले जिसने इस प्रतिभाशाली बालक को भविष्य का एक चमत्कारिक व्यक्ति बना दिया। शिक्षा के लिये कैलाश चन्द्र लाहौर भी गए और लौटकर रामपुर में एक अध्यापक पद पर कार्य करने लगे। किन्तु असीम प्रतिभा और विशाल कार्यक्षेत्र इस छोटी सी सीमा में रहने वाला नहीं। अतः कुछ समय बाद रामपुर छोड़कर बाहर निकल पड़े और धर्म तथा भारतीय संस्कृति का प्रचार करते हुए रेडियो के लिये विविध प्रकार की साहित्यिक रचनाएँ करने लगे। इसी अवधि में ही रेडियो के लिये अत्यन्त उत्कृष्ट नाटकों और काव्यों की रचना की ।

दिसम्बर सन् 1949 में कानपुर के विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कालेज में धर्माचार्य के पद पर नियुक्त हुए वस्तुतः आचार्य जी के जीवन का स्वर्णकाल यहीं से आरंभ होता है। धर्मोपदेश के अतिरिक्त उच्च कक्षाओं में हिन्दी साहित्य का अध्यापन भी करते रहे। आप कालेज में एक अत्यन्त लोकप्रिय और सफल अध्यापक सिद्ध हुए। कठिन, गूढ़ और जटिल विषयों को अत्यन्त सरल और सुबोध रीति से अनायास समझा देना आचार्य का विशेष गुण था।

अनुसन्धान का आरंभ

सर्वप्रथम प्रेरणा देने वाले व्यक्ति रामपुर दरबार के गायक मिरज़ा नवाब हुसेन थे, जिन्होंने जीवन के अंतिम क्षणों में अपने प्रिय शिष्य बृहस्पति को इन शब्दों से प्रेरित किया–"संगीत का अभ्यास करो, शास्त्रों को समझो, उन पर श्रृद्धा करो और उन ऋषि–मुनियों के अभिप्राय को समझो जो निःस्पृह, निःस्वार्थी और सत्यभाषी रहे हैं। हम शास्त्र नहीं जानते, परन्तु हमारा दृढ़ विश्वास है कि ऋषियों के ग्रन्थों को समझने के लिये जितनी तपस्या की आवश्यकता है, वह बहुत दिनों से नहीं की गई है। तुम्हारे पूर्वज विद्वान एवं संगीत मर्मज्ञ रहे हैं, तुम उनके वंशधर हो, यदि तुप प्राचीन ग्रन्थों को समझने के लिये तपस्या नहीं करोगे तो और कौन करेगा । विश्वास रखो, परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता, हम न होंगे परन्तु तुम्हारी सफलता पर हमारी आत्मा को शांति मिलेगी और वहीं हमारी गुरु दक्षिणा होगी। यदि नहीं करोगे, तो हमारे ऋणी रहोगे और हमारी आत्मा अशान्त रहेगी"।

दूसरे व्यक्ति जिन्होंने आचार्य जी को भारतीय संगीत के पुनरूत्थान के लिये प्रेरित किया वे रामपुर राज्य के पुस्तक संग्रहालय के विद्वान एवं यशस्वी प्रबन्धक मौलाना इम्तियाज़ अली खां अर्शी थे।

आचार्य बृहस्पति ने गुरुओं के ऋण से उबरने के लिये संगीत के संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन आरंभ कर दिया। कालेज पुस्तकालय की संस्कृत शाखा से शारंगदेव रचित "संगीत रत्नाकर" ग्रन्थ लेकर उराका अध्ययन उत्साह व प्रसन्नता से करने लगे। शास्त्र विवेचन की प्राचीन प्रणाली सूत्ररूप से शास्त्र विवेचन करती थी और बीच की तमाम ऐसी बातें जो गुरूमुख से प्रत्यक्ष कर्माभ्यास के रूप में होती थी, उसे छूती रहती थी। गुरुजनों के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन की पद्धति की स्थिति का कालांतर में लोप हो जाने के कारण वे बातें

* एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

रामपुर मे गुणी लोग रहते थे, उन्हें अपने शिष्यों को शिक्षा देने का शौक था। शिष्यों के साथ वैसा ही व्यवहार रखते थे जैसे अपने बच्चों के साथ, बहुत प्यार व परिश्रम से शिक्षा देते थे, उनकी सफलता पर उन्हे आत्मिक सुख प्राप्त होता था। आचार्य महोदय का प्रयास उस युग को पुन: वापस लाने का हुआ था।

आपके प्रमुख शिष्यों में श्रीमती सुलोचना बृहस्पति (गायन), श्री गुलाम मुस्तफा (गायन) और डॉ0 विनय कुमार अग्रवाल (सितार) रहे है जिन्होंने देश-विदेश में ख्याति प्राप्त की है। अनेक शिष्य जिन्होंने आपसे शिक्षा ग्रहण की है और कला की साधना करते हुए विभिन्न विश्वविद्यालयों, कॉलेजों तथा विद्यालयों में संगीत शिक्षण का कार्य कर रहे हे उनके नाम हैं-श्रीमती सुमित्रा आनन्द पाल सिंह (संगीत चिंतामणि) के द्वितीय भाग की लेखिका), श्री प्रताप नारायण सिंह (पखावज), श्री हरीश दुबे (तबला), श्री भीमसेन शर्मा (गायन) एवं श्री सौभाग्य वर्धन (गायन)।

ऐसी दिव्य महाविभूति ने 31 जुलाई, 1979 के दिन धर्मक्षेत्र, कुरुक्षेत्र में कार्यरत रहकर अकस्मात अपनी जीवन लीला पूर्ण की। ये सदा यही कहा करते थे कि अभी बहुत कुछ करना है, जिन्दगी चाहिए अथवा इसे पूरा करने के लिये फिर जन्म लेना पड़ेगा। संगीत जगह आचार्य जी के अप्रतिम योगदान के लिए सदैव उनका ऋणी रहेगा।

नोट- यह शोध आलेख लेखिका के मौलिक शोध और सर्वेक्षण पर आधारित है।

****